

माँ नंदा-सुनंदा महोत्सव

चर्चा में क्यों

हाल ही में उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री ने नैनीताल में माँ नंदा-सुनंदा महोत्सव, 2024 का वरचुअल माध्यम से उद्घाटन किया और लोगों को उनकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने में महोत्सव की भूमिका पर प्रकाश डाला।

मुख्य बंदि

- माँ नंदा-सुनंदा महोत्सव
 - प्रतविरष सतिंबर में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ कषेत्र में नंदाष्टमी त्योहार के दौरान देवी नंदा और सुनंदा की याद में मनाया जाता है।
 - अलमोडा, नैनीताल, कोट अलॉग, भोवाली और जोहार जैसे स्थानों में देखा गया।
- मुख्यमंत्री ने अल्पाइन घास के मैदानों को हमिलय की 'अनमोल वरिसत' बताते हुए इनके संरक्षण के लयि 2 सतिंबर को बुग्याल संरक्षण दविस मनाने की घोषणा की।

बुग्याल

- उत्तराखण्ड में उच्च ऊँचाई वाले अल्पाइन घास के मैदान स्थति हैं, जनिहें "बुग्याल" के नाम से जाना जाता है।
 - ये घास के मैदान 3,000 मीटर (10,000 फीट) से अधिक ऊँचाई पर स्थति हैं और अपनी समृद्ध वनस्पतयिों के लयि जाने जाते हैं।
- पारसिथतिक महत्त्व: बुग्याल कषेत्र की जैववविधता के लयि महत्त्वपूरण हैं, जो वभिन्न प्रकार की वनस्पतयिों और जीवों को पोषण देते हैं।
 - वे पशुओं के लयि चारागाह के रूप में काम करते हैं और पारसिथतिक संतुलन बनाए रखने के लयि महत्त्वपूरण हैं।
- उत्तराखण्ड के लोकप्रयि बुग्याल
 - दयारा बुग्याल: अपने वशिल घास के मैदानों और आश्चर्यजनक दृश्यों के लयि जाना जाता है।
 - बेदनी बुग्याल: यह अपनी पराकृतिक सुंदरता और टरैकगि सथल के रूप में प्रसदिध है।
 - औली बुग्याल: अपने मनोरम दृश्यों और जैववविधता के लयि प्रसदिध, औली नंदा देवी, कामेट एवं दूनागरि की वशिल बरफीली चोटयिों के बीच स्थति है।